28 जुलाई से 3 अगस्त तक गांव–गांव में शहीदी सप्ताह मनायेंगे।

वीर शहीदों के खून से सने सुर्ख लाल झंडे को ऊंचा उठायेंगे।

शहीद योद्धाओं के सपनों को साकार करने आखिरी सांस तक उनकी राह में संघर्ष करेंगे।

कॉ. चारू मजुमदार　　कॉ. कन्हाई चटर्जी

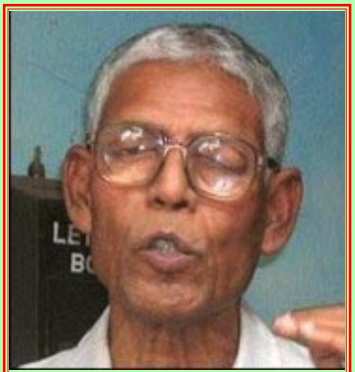

कॉ.सुशील राय

कॉ. रवूफ

दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी
भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

हमारी पीढ़ी का बहाया
खून, इन सूखे खेतों में
पानी बन गया।, बेटों! इस
धरती पर बहा तुम्हारा खून
अब मै सोखने नहीं दूंगा।,
बिछाया हूं यह गमछा नहीं,
जख्मों से भरा दिल है।,
सम्भालकर मैं तुम्हारी
कुरबानी को, सौंप दूंगा
आने वाली पीढ़ियों को!

दण्डकारण्य की पार्टी कतारों, पीएलजीए के कमांडरों व लाल योद्धाओं एवं प्यारे लोगों!

भारत की क्रांति के महान नेता, हमारी पार्टी के संस्थापक एवं प्यारे शहीद कामरेड चारु मजुमदार एवं कामरेड कन्हाई चटर्जी के दर्शाये दीर्घकालीन जन युद्ध के रास्ते पर अमल करते हुए भारत की नवजनवादी क्रांति को सफल बनाने नक्सलबाड़ी से लेकर आज तक दस हजार से भी ज्यादा क्रांतिकारियों व क्रांतिकारी जनता ने पीड़ित जनता के मुक्ति संग्राम में अपना गरम खून बहाया। पिछले 28 जुलाई, 2013 से लेकर इस साल भर में देश के विभिन्न संघर्ष इलाकों– दण्डकारण्य, बिहार–झारखंड, उत्तर तेलंगाना, एओबी, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, असोम आदि में सौ से ज्यादा हमारे प्रिय कामरेडों ने सर्वोच्च कुरबानी दी। जबकि सिर्फ दण्डकारण्य में ही इस दौरान 40 कामरेडों ने अपनी जानें कुरबान कीं। मजदूर वर्ग के इन उत्तम संतानों में पार्टी नेतृत्व से लेकर पीएलजीए के कमांडरों व लाल योद्धाओं सहित क्रांतिकारी जनता भी शामिल हैं। आगामी 28 जुलाई से 3 अगस्त तक आयोजित होने वाले शहीदी सप्ताह के दौरान इन तमाम कामरेडों को सिर झुकाकर विनम्रतापूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। उनकी यादों को ताजा व साझा करते हुए लक्ष्य को हासिल करने तक उनकी कुरबानियों की राह पर दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ने का संकल्प लेंगे।

देश में मजबूती से अपनी जड़े जमाये संशोधनवाद पर जबर्दस्त प्रहार करके भारत की नवजनवादी क्रांति की सही दिशा तय करने वाले कॉमरेड चारू मजुमदार एवं कॉमरेड कन्हाई चटर्जी को सबसे पहले श्रद्धासुमन अर्पित करेंगे।

भाकपा (माओवादी) की केंद्रीय कमेटी की पोलित ब्यूरो सदस्य कॉमरेड सुशील राय उर्फ बरुण दा जिनकी उम्र 78 वर्ष थी, की लंबी अस्वस्थता के बाद 18 जून, 2014 को शहादत हुई। 21 सितंबर, 2004 को भाकपा (माओवादी) के गठन के कुछ ही समय बाद वे कोलकाता से गिरफ्तार हुए थे। उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनायी गयी थी। दुश्मन के दमनात्मक हथकंडों व जेल में व्याप्त अमानवीय परिस्थितियों के चलते उनका स्वास्थ्य लगातार बिगड़ता गया। दुश्मन के चंगुल में रहते हुए भी मार्क्सवादा–लेनिनवाद–माओवाद पर अटूट विश्वास के साथ क्रांतिकारी जनयुद्ध के झण्डे को ऊंचा उठाये रखने वाले प्रियतम नेता, वरिष्ठ व अनुभवी क्रांतिकारी योद्धा कॉमरेड सुशील राय को शीश झुकाकर विनम्रतापूर्वक जोहार अर्पित करेंगे।

नक्सलबाड़ी के समय से लेकर अपनी आखिरी सांस तक दीर्घकालीन जनयुद्ध की दिशा को ऊंचा उठाये रखने वाले, संशोधनवाद के खिलाफ अविराम संघर्ष करते हुए भाकपा (मा–ले) नक्सलबाड़ी की स्थापना में महत्वपूर्ण व नेतृत्वकारी भूमिका निभाने वाले अनुभवी, वयोवृद्ध एवं प्यारे कॉमरेड शेख अब्दुल रऊफ जिनकी गंभीर अस्वस्थता के कारण 89 वर्ष की उम्र में 9 फरवरी को शहादत हुई, को इस मौके पर सिर झुकाकर श्रद्धपूर्वक लाल सलाम् पेश करेंगे। पिछले 1 मई को भाकपा (माओवादी) एवं भाकपा (मा–ले) नक्सलबाड़ी के विलय की घोषणा का उल्लेख यहां लाजिमी होगा।

1946 के ऐतिहासिक तेभागा किसान आन्दोलन से लेकर आखिरी तक किसी न किसी तरह भारत के कम्यूनिस्ट, क्रांतिकारी आन्दोलन के साथ जुड़े रहे अनुभवी, वयोवृद्ध एवं प्रिय कॉमरेड सुनीति कुमार घोष का विगत 11 मई को 96 साल की उम्र में निधन हुआ है। वे आखिरी सांस तक हमारी पार्टी के दोस्त, शुभचिंतक व समर्थक बने रहे। बुनियादी तौर पर नक्सलबाड़ी की राजनीतिक लाइन को आखिरी दम तक ऊंचा उठाये रखने वाले आदरणीय क्रांतिकारी बुद्धिजीवि कॉमरेड सुनीति कुमार घोष को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।

वीर शहीदों की कुरबानियों के जरिए ही क्रांतिकारी आन्दोलन ने कई उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की। मुठ्ठीभर लोगों के द्वारा प्रारंभ क्रांतिकारी आन्दोलन आज देश के कई राज्यों में फैल गया है। दण्डकारण्य, बिहार– झारखंड समेत कई संघर्ष इलाकों में जोतने वालों को जमीन मिल गयी। सैकड़ों गांवों में दुष्ट मुखियाओं का प्रभुत्व खत्म हो गया। वन विभाग के उत्पीड़न का अंत हो गया। पंचायत स्तर से लेकर डिविजन स्तर तक जन राज सत्ता के अंग–क्रांतिकारी जनताना सरकारों का गठन होकर जनता के हाथों सत्ता आ गयी है। जन संघर्षों व जनयुद्ध के जरिए जनता जल–जंगल–जमीन व संसाधनों को कॉरपोरेट कंपनियों के कब्जे में जाने से बचा पायी।

हमारे वीर शहीदों की कुरबानियों के बगैर हम इन उपलब्धियों की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। शोषक–शासक वर्गों के द्वारा देश की संघर्षरत शोषित व उत्पीड़ित जनता, उसका नेतृत्व करने वाली पार्टी, उसकी सेना पीएलजीए एवं जन राज सत्ता के अंग–क्रांतिकारी जनताना सरकारों पर अन्यायपूर्ण युद्ध–ऑपरेशन ग्रीनहंट चलाया जा रहा है। साम्राज्यवादियों खासकर अमेरिकी साम्राज्यवादियों की देखरेख में यह फासीवादी चौतरफा सैनिक हमला दिन–ब–दिन व्यापक व तेज होता जा रहा है। हाल ही में सत्तारूढ़ नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार इसे और तेज करने की योजना पर अमल कर रही है। आज साम्राज्यवाद का आर्थिक व वित्तीय संकट लगातार गहराता जा रहा है। उससे बाहर आने के लिए वह पिछड़े देशों के संसाधनों को लूटने के अपने प्रयासों को तेज कर रहा है। हमारे देश के दलाल शासक पहले से ही साम्राज्यवादियों के हितों के अनुरूप देश की नीतियां बदल कर उनके सामने नतमस्तक हो गये हैं। हमारे देश के छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र बिहार–झारखंड, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, आन्ध्रप्रदेश, तेलंगाना आदि राज्यों में अकूत प्राकृतिक संपदाएं हैं। शासक वर्गों के द्वारा इन संपदाओं की लूट में बाधा बने क्रांतिकारी आन्दोलन का सफाया अब शोषक–शासकों की पहली प्राथमिकता बन गयी है। इसीलिए जनता पर शोषकों ने युद्ध थोप दिया है। दण्डकारण्य के चारगांव, रावघाट, कुब्बेमारी, बुधियारी माड़, आमदाय, तुलाड् एवं महाराष्ट्र के कोरची लौह प्रकल्प, दमकोडी, सुरजागढ़ आदि लौह अयस्क व बाक्साइट खदानों को शुरू करने के प्रयास तेज हो रहे हैं। टाटा, एस्सार, जिंदल, मित्तल, टीपीजी आदि कॉरपोरेट कंपनियां अपने वृहद् उद्योगों की स्थापना के लिए एड़ी–चोटी एक कर रही हैं। कारखानों के लिए कच्चामाल की आपूर्ति एवं वहां से बाजार तक माल ढुलाई को सस्ता बनाने एवं अपनी लूट व शोषण के खिलाफ संघर्षरत जनता का दमन करने सशस्त्र बलों की आवाजाही को सरल बनाने के लिए ही, जनता के जबर्दस्त विरोध के बावजूद लुटेरी सरकारें सशस्त्र बलों की संगीनों के साये में रेल्वे लाइन को पूरा करने पर तुली हुई हैं। चारों तरफ अर्ध–सैनिक बलों के अड्डे बनाकर रावघाट खदान को लूटकर ले जाने की षड़यंत्र चल रही है। बड़े कारखानों को बिजली व पानी की आपूर्ति करने बड़े बांधों के निर्माण की कोशिशें भी तेज हो रही है। बड़े बांधों, बड़े खदानों व बड़े उद्योगों के खिलाफ हमारी पार्टी के नेतृत्व में यहां लंबे समय से जन संघर्ष जारी हैं। रावघाट खदान को बचाने के लिए शहीद कामरेड सुकदेव के नेतृत्व में प्रारंभ संघर्ष आज भी जारी है। इन संघर्षों के फलस्वरूप ही कॉरपोरेट कंपनियों की योजनाएं आगे नहीं बढ़ रही हैं। क्रांतिकारी आन्दोलन के द्वारा उत्पन्न चेतना का ही नतीजा है, बैलाडीला प्रदूषण विरोधी जन आन्दोलन। आम जनता की लूट, शोषण, विस्थापन व विनाश पर आधारित शोषक–शासकों के विकास के नमूने को लात मारकर स्वावलंबन पर आधारित असली विकास की दिशा में आगे बढ़ते हुए यहां की संघर्षरत जनता अपनी राजनीतिक सत्ता के अंग–क्रांतिकारी जनताना सरकारों को मजबूत कर रही है एवं उनका विस्तार कर रही है। शोषणमूलक सत्ता को उखाड़ फेंकने के तहत जारी इन संघर्षों व संघर्षरत जनता को कुचलने, जनता का नेतृत्व करने वाली पार्टी, पीएलजीए, क्रांतिकारी जनताना सरकारों का सफाया करने के लिए शोषक–शासक वर्गों की सरकारें एड़ी–चोटी का जोर लगा रही हैं।

विगत साल भर के दमन में दसियों कामरेड शहीद हो गये हैं। इनमें से कुछेक कामरेडों की दुश्मन ने फर्जी मुठभेड़ों में क्रूरतापूर्वक हत्या की। जबकि कुछ और कामरेडों ने दुश्मन के साथ वीरतापूर्वक लड़ते हुए अपने प्राणों को न्योछावर किया। अस्वस्थता और दुर्घटनाओं के चलते भी कुछ कामरेड शहीद हुए हैं।

17 फरवरी को बेतकाठी गांव के पास उत्तर गढ़चिरोली–गोंदिया डिविजन के सात कॉमरेडों की दुश्मन ने षड्यंत्र रचकर बर्बरतापूर्वक हत्या की। इनमें डीवीसीएम कॉमरेड लालसू, एसी स्तर के कॉमरेड्स सुनिल, पुन्नी, वीरू, नवीन, श्यामको एवं पीपीसी सदस्य कॉमरेड राजेश शामिल हैं। ये कॉमरेड दुश्मन के विश्वासघाती दांव–पेंच के शिकार होकर शहीद हुए हैं। इनके अलावा एरिया क्रांतिकारी जनताना सरकार की अध्यक्षा कॉमरेड धन्नी, कॉमरेड रामसु (पार्टी सदस्य), कॉमरेड रीता (पीपीसीएम), कॉमरेड सरिता (पार्टी सदस्य) दुश्मन के साथ लोहा लेते हुए शहीद हो गयीं। विस्फोटक दुर्घटना में कॉ. माधुरी (गड़चिरोली) शहीद हो गई।

कॉ. लालसू

कॉ. शामको

कॉ. वीरू

कॉ. राजेश

गढ़चिरोली–गोंदिया अमर शहीदों को लाल सलाम

कॉ. पुन्नी

कॉ. नवीन

कॉ. सुनील

कॉ. रीता

कॉ. सरिता

कॉ. धन्नी

कॉ. नरेश

तेलंगाना, दक्षिण बस्तर की सरहद में दुश्मन के खिलाफ साहस के साथ संघर्ष करते हुए खम्मम जिला कमेटी सदस्य कॉमरेड नरेश, एवं मिलिशिया सदस्य कॉमरेड रामू शहीद हुए।

दक्षिण बस्तर डिविजन में दुश्मन का प्रतिरोध करते हुए कॉमरेड अपका शांति, एरिया मिलिशिया कमांडर–इन–चीफ कॉमरेड माडवी सोमाल (पीएम), कॉमरेड मूसाकि अड़माल (पीएलजीए सदस्य), कॉमरेड जोगाल (मिलिशिया), कॉमरेड ककेम मुन्नी (मिलिशिया), पीएल–4 की सदस्या कॉमरेड मुसाकि पायके शहीद हुईं।

पश्चिम बस्तर डिविजन में दुश्मन के साथ हुई मुठभेड़ में कॉमरेड ताति सन्नू (कंपनी–2 का सदस्य) एवं कॉमरेड पामुला चंदू (गार्ड) वीरगति को प्राप्त हुए। गंगालूर की साहसिक सैनिक कार्रवाई में कॉमरेड पोट्टामि बदरू (मिलिशिया) शहीद हो गये। दुश्मन के अभियान का डटकर मुकाबला करते हुए जन मिलिशिया कमांडर कॉमरेड फागू ने अपनी जान की कुरबानी दी। पीएलजीए की प्रतिरोधी कार्रवाईयों के दौरान दुर्घटनावश कॉमरेड राजेश (मिलिशिया) ने शहादत को पाया। विस्फोटक दुर्घटना में कॉ. सुरेश (गंगालूर) शहीद हो गये।

पूर्व बस्तर में दुश्मन के हमलों में सीनियर एसीएम कॉमरेड दरबार मंडावी, कॉमरेड ज्योति (गार्ड), कामरेड जानो (मिलिशिया) शहीद हुईं। कॉमरेड रोण्डा (गार्ड) बरगढ़ जिले के गंधमर्दन पहाड़ी पर हुई मुठभेड़ में शहीद हो गये।

कॉ. दरबार

कॉ. विजय

कॉ.ज्योति

पूर्व बस्तर अमर शहीदों को लाल सलाम

कॉ. अमिता

कॉ.जानो

कॉ. रोंडा

विगत साल भर में फर्जी मुठभेड़ों में कई कॉमरेडों ने अपनी जानें कुरबान की। पूर्व बस्तर के डिविजन कार्रवाई दस्ते के कॉमरेड विजय, पश्चिम बस्तर डिविजन के नेशनल पार्क एरिया के गरतुल गांव के पास कॉमरेड नवीन, कॉमरेड मासे, कॉमरेड सन्नु की बर्बर यातनाएं देने के बाद हत्या की गयी। कॉमरेड मासे के साथ दुष्कर्म किया गया था। गंगालूर एरिया के तोड़का गांव के ग्रामीण आदिवासी किसान ताति बुदू , ईसुलनार गांव के कुरसम लच्छू (मिलिशिया) को पकड़कर बाद में उनकी हत्या की गयी। दक्षिण बस्तर में आन्ध्रप्रदेश–छत्तीसगढ़ राज्यों के संयुक्त बलों के ऑपरेशनों के दौरान दुश्मन की अंधाधुंध फायरिंग में मड़काम उंगाल एवं काका धर्माल शहीद हो गये। माड़ डिविजन के करका जंगल में तीन साधारण आदिवासी किसानों–करकानार गांव के 65 साल के लकमो मंडावी, 23 साल के विज्जोन मंडावी, गोटा जमरी के रामसाई कौडो एवं उत्तर बस्तर डिविजन के कोयलीबेड़ा एरिया के आमाखड्डा गांव के दो आदिवासी किसान तुलसीराम दर्रो एवं सोमारू को पकड़कर गोली मार दी गयी।

कॉ. सरोजा

करीबन तीन दशक तक क्रांतिकारी आन्दोलन में दृढ़तापूर्वक काम करने वाली आदर्शवान वरिष्ठ महिला कम्यूनिस्ट योद्धा कॉमरेड गज्जला सरोजा (शहीदा, अमरा) केंसर बीमारी की वजह से 11 दिसंबर को शहीद हुईं। दक्षिण बस्तर के जेगुरगुण्डा एलजीएस कमांडर कॉमरेड कुर्सम बोज्जाल, एवं एसजेडसी स्टाफ कॉमरेड राकेश (मोनु) सांप के डंसने से शहीद हो गये। कॉमरेड अमिता की दुखद मौत हुई। गिरफ्तार होकर जेल में सजा काट रहे कॉमरेड रामलाल जगदलपुर जेल में व्याप्त अमानवीय परिस्थितियों के चलते गंभीर अस्वस्थता के शिकार होकर जेल अधिकारियों की आपराधिक लापरवाही की वजह से शहीद हो गये।

कॉ. भूमय्या

आन्ध्रप्रदेश राज्य में 4 जुलाई, 2013 को वरिष्ठ माओवादी नेता कॉमरेड गण्टि प्रसादम की जघन्य हत्या करने वाले शासक वर्गों ने 25 दिसंबर को पृथक जनवादी तेलंगाना राज्य आन्दोलन के नेता कॉमरेड आकुला भूमय्या की हत्या करवाई।

कॉ. मंगन्ना

एओबी के क्रांतिकारी आन्दोलन के कई साथी इस साल भर में शहीद हुए हैं। खासकर लंबे समय से क्रांतिकारी आन्दोलन को अपनी सेवाएं देते आये वरिष्ठ नेता कॉमरेड मंगन्ना (डीवीसीएम), कॉमरेड डुंब्री को दुश्मन ने एक साजिश के तहत पकड़कर उनकी हत्या की। कॉमरेड शिरीषा (एसीएम) की एक दुर्घटना में शहादत हुई।

कॉ. शिरीषा

शासक वर्ग दमन के जरिए आन्दोलनों को अस्थायी रूप से नुकसान पहुंचा सकते हैं। दुनिया के क्रांतिकारी आन्दोलनों के इतिहास ने इसे कई बार साबित कर दिया है कि कोई भी प्रतिक्रियावादी

जहां कहीं भी संघर्ष होता है वहां कुरबानी करनी पड़ती है और मौत एक आम घटना बन जाती है। लेकिन हमारे दिलों में जनता का हित और लोगों की भारी बहुसंख्या की तकलीफें मौजूद हैं, तथा जब हम जनता के लिए कुरबान हो जाते हैं तो यह एक शानदार मौत होती है। फिर भी हमें गैरजरूरी कुरबानियों से बचने की भरसक कोशिश करनी चाहिए।

– कामरेड् माओ

दृढ़ संकल्प रखो, कुरबानियों से न डरो और हर तरह की कठिनाइयों को दूर करते हुए विजय प्राप्त करो!

ताकत जनान्दोलनों को हमेशा के लिए खत्म नहीं कर सकती है और क्रांतिकारी जनान्दोलनों की जीत को कभी नहीं रोक सकती है। जब तक दुनिया में शोषण एवं उत्पीड़न जारी रहेंगे तब तक जन विद्रोह व जन संघर्ष उठते रहेंगे। तमाम अड़चनों को लांघते हुए अंतिम जीत की ओर अग्रसर होंगे। यह जन युद्ध है। सैकड़ों करोड़ पीड़ित लोग जिस दिन एक हो जायेंगे, मुठ्ठीभर शोषकों को दुनिया की कोई भी प्रतिक्रियावादी सेना बचा नहीं सकती है। अत्याधुनिक हथियार चाहे जितने भी हों, उन्हें सुरक्षा प्रदान नहीं कर सकते। अंतिम जीत जनता की ही होगी। जनता ही इतिहास की निर्माता है। जनता पर इस अटूट विश्वास के साथ ही कई योद्धा जनयुद्ध में अपनी जान की बाजी लगा रहे हैं, अनगिनत कुरबानियां दे रहे हैं। उनकी कुरबानियों की विरासत को दृढ़ता से अपनाना होगा। उस विरासत को और सुसंपन्न करना होगा। शहीद योद्धाओं के आदर्शों पर बेहिचक अमल करना होगा। उनके सपनों को साकार करने एवं उनके अधूरे आशयों को पूरा करने हमें अपनी सारी ताकत झोंकनी होगी। इसके उल्टे, अस्थायी नुक्सानों से घबराकर उन्हें स्थायी समझकर दिग्भ्रमित होना एवं जनता पर विश्वास खोकर, कमयूनिस्ट मूल्यों व आदर्शों को तिलांजलि देकर, कुरबानी से डरकर दुश्मन के सामने घुटने टेकने का मतलब है, पीड़ित जनता के साथ गद्दारी। आत्म समर्पण से तीखी नफरत करने, आत्म सम्मान के साथ जीने व उसके लिए लड़ने, वीर शहीदों के खून से रंगे सुर्ख लाल झंडे को हमेशा व आखिरी दम तक ऊंचा उठाये रखने का शपथ लेंगे। शहीदों के स्मृति सप्ताह के दौरान गांव–गांव में शहीदों की याद में स्मारक चिन्हों का निर्माण करेंगे। सभा–सम्मेलनों का आयोजन करके उनकी कुरबानियों, वीरता एवं उनके आदर्शों का स्मरण करेंगे। उनको अपनायेंगे। उन पर अमल करेंगे। शहीदों के रास्ते में आगे कदम बढ़ायेंगे। हमारे प्यारे शहीद योद्धाओं को दी जाने वाली सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी।

- ✶ कॉमरेड्स चारू मजुमदार एवं कन्हाई चटर्जी को लाल–लाल सलाम्।
- ✶ क्रांतिकारी जनयुद्ध में जान कुरबान करने वाले तमाम वीर शहीदों को लाल–लाल सलाम्।
- ✶ दुश्मन की विश्वासघाती एलआईसी युद्ध नीति का मुकाबला करते हुए सभी स्तरों के पार्टी नेतृत्व की रक्षा करेंगे। नुकसानों को कम करेंगे।
- ✶ जनयुद्ध को तेज करके ऑपरेशन ग्रीनहंट को हरायेंगे।
- ✶ भारत की नवजनवादी क्रांति–जिंदाबाद।

क्रांतिकारी अभिनंदन के साथ...

दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

मौत का सामना सब लोगों को समान रूप से करना पड़ता है, परंतु कुछ लोगों की मौत की अहमियत थाए–शान पर्वत से भी ज्यादा भारी होती है और कुछ लोगों की पंख से भी ज्यादा हल्की। जनता के हित के लिए जान देना थाए–शान पर्वत से भी ज्यादा भारी अहमियत रखता है, जबकि फासिस्टों के लिए काम करना तथा शोषकों व उत्पीड़कों के लिए जान देना पंख से भी हल्की अहमियत रखता है।

– कामरेड् माओ